

कूई स्त्री. (तद्.) जल में उत्पन्न कमल की तरह का एक पौधा, जिसके पत्ते कमल के पत्ते की तरह होते हैं पर कुछ लंबे और कटावदार होते हैं पर्या. कैरव, कुमुदिनी, कुमुद, कोकाबेली, गर्दभ सौगंधिक, कच्छ, सितोत्पल, कुवल, हल्लक, कोका, उत्पल, हिमाब्ज, छोटा कुआँ आदि।

कूक स्त्री. (देश.) घड़ी या बाजे में कुंजी देने की क्रिया।

कूक स्त्री. (तद्.) 1. लंबी सुरीली ध्वनि 2. मोर या कोयल की बोली 3. महीन और सुरीले स्वर से राने का शब्द (जैसे स्त्रियों का)।

कूकना अ.क्रि. (तद्.) लंबी सुरीली ध्वनि निकालना 2. कोयल या मोर का बोलना।

कूकना स.क्रि. (देश.) कमानी कसने के लिए घड़ी या बाजे के पेंच को घुमाना, कुंजी भरना।

कूकर पुं. (तद्.) कुत्ता, श्वान।

कूकरकौर पुं. (देश.) 1. कुत्ते के आगे डाली जाने वाली जूठन, टुकड़ा 2. तुच्छ वस्तु लाक्षा.अर्थ स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी को दिया जाने वाला प्रलोभन।

कूकरनिंदिया स्त्री. (देश.) वह हल्की नींद जो थोड़े से खटके से टूट जाए।

कूका पुं. (देश.) चिल्लाहट भरी लंबी पुकार, सिक्खों का एक पंथ।

कूखना अ.क्रि. (देश.) दुःख या क्लेश से ऊँह-ऊँह शब्द करना, काँखना।

कूच पुं. (फ़ा.) 1. प्रस्थान, रवानगी 2. मृत्यु, परलोकयात्रा मुहा. कूच कर जाना-मर जाना; (किसी के) देवता कूच कर जाना-होश हवाश जाता रहना, भय या और कारण से विवेक नष्ट हो जाना; कूच का डंका या नक्कारा बजाना-फौज का समूह का रवाना होना, मर जाना; कूच बोलना-प्रस्थान करना।

कूचा पुं. (फ़ा.) छोटा रास्ता, गली मुहा. कूचा झाँकना इधर-उधर-ठोकर खाना, गली गली मारा फिरना; 2. रेशेदार लकड़ी या मूँज को कूटकर बनाया हुआ झाड़न 3. झाड़ू, बोहारी।

कूचागर्दी पुं. (फ़ा.) इधर-उधर फिरना, व्यर्थ घूमना, अवारागर्दी करते घूमना।

कूचिका स्त्री. (तद्.) 1. कूँची, कूर्चिका 2. कुंजी, ताली।

कूज स्त्री. (तद्.) ध्वनि, शब्द 2. शब्द करने की क्रिया 3. पहियों की घरघराहट 4. कूजने की क्रिया, कू कू की ध्वनि।

कूजना अ.क्रि. (तद्.) 1. कोयल, मयूर का मधुर शब्द करना।

कूजा पुं. (तद्.) मोतिया या बेले का फूल।

कूजा पुं. (फ़ा.) 1. प्याले या पुरबे के आकार का मिट्टी का बरतन, कुल्हड़, 2. मिट्टी के पुरबे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिसरी 3. कुब्ज, कूबड़ा।

कूजित वि. (तत्.) 1. जो बोला या कहा गया हो, ध्वनित 2. गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण।

कूट पुं. (तत्.) 1. पहाड़ की ऊँची चोटी जैसे-हेमकूट, चित्रकूट 2. सींग 3. (अनाज आदि की) ऊँची और बड़ी राशि या ढेरी जैसे अन्नकूट 4. हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है, खोंपी, परिहारी 5. लोहे का मोंगरा, हथौड़ा 6. हरिणों के फँसाने का फंदा या जाल 7. लकड़ी के म्यान में छिपा हुआ हथियार जैसे-तलवार, गुप्ती आदि 8. छल, धोखा, जैसे-कूटनीति 9. मिथ्या, झूठ 10. अगस्त्य मुनि का एक नाम 11. घड़ा 12. गुप्त बैर, कीना 13. नगर का द्वार 14. गूढ़ भेद, गुप्त रहस्य 15. जिसके अर्थ में हेर फेर हो, जिसका समझना कठिन हो, जैसे-सूर के कूट (पद) 16. वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो 17. निहाई 18. वह बैल जिसके सींग टूटे हो 19. घर, आवास 20. घट, घड़ा 21. उभार सहित माथे की हड्डी 22. सिर, छोर, किनारा वि. (तत्.) 1. झूठ, मिथ्यावादी 2. धोखा